विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी मंत्रालय
MINISTRY OF
SCIENCE AND
TECHNOLOGY
सत्यमेव जयते

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वाधान में
(डी एस टी के स्वायत्त संस्थानों के लिए)

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उच्च अध्ययन संस्थान
द्वारा आयोजित दो दिवसीय
तृतीय अखिल भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी
राजभाषा संगोष्ठी - **2025**

दिनांक 13-14 नवंबर 2025
विषयः विज्ञान संप्रेषण में हिंदी की भूमिका

आयोजन स्थल

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उच्च अध्ययन संस्थान
(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)
(भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीविभाग के अधीन एक स्वशासी संस्थान)
विज्ञान पथ पश्चिम बड़ागाँव, गड़चुक गुवाहाटी -**781035**, असम

संगोष्ठी का उद्देश्य

भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। वैदिक काल से लेकर तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे महान विश्वविद्यालयों तक, भारतीय विद्वानों ने भौतिकी, गणित, खगोलशास्त्र, रसायन, चिकित्सा विज्ञान और अभियांत्रिकी के विविध क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया। उस समय विज्ञान को *भौतिक विज्ञान* की संज्ञा दी गई थी और छात्र इसे गहन रूचि एवं शोधात्मक दृष्टिकोण के साथ अध्ययन करते थे।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारतीय पुनर्जागरण के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भावना ने नई चेतना का संचार किया। सी.वी. रामन, मेघनाथ साहा, श्रीनिवास रामानुजन, होमी भाभा और विक्रम साराभाई जैसे वैज्ञानिकों ने वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में भारत को विशेष पहचान दिलाई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने वैज्ञानिक विकास को राष्ट्रनिर्माण का आधार माना और इसी उद्देश्य से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनेक राष्ट्रीय संस्थानों और अनुसंधान प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई। विभिन्न राज्यों ने भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए अनुसंधान एवं नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा दिया। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समर्पित प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत ने अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरण विज्ञान जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग देश में वैज्ञानिक अनुसंधान को दिशा प्रदान करने के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रौद्योगिकीय क्षमताओं को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केवल विकास का माध्यम ही नहीं, बल्कि आधुनिक सभ्यता और मानवीय जीवन का आधार बन चुके हैं। विज्ञान सामाजिक कल्याण के लिए संजीवनी का कार्य करता है तथा राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की क्षमता को सुदृढ़ बनाता है।

भारत सरकार के *आत्मनिर्भर भारत* के लक्ष्य को साकार करने में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका केंद्रीय है। इसके लिए आवश्यक है कि हम स्वदेशी संसाधनों पर आधारित *स्वदेशी प्रौद्योगिकी* को बढ़ावा दें और अनुसंधान एवं नवाचार को समाज की आवश्यकताओं से जोड़ें। इसी परिकल्पना के साथ यह संगोष्ठी आयोजित की जा रही है, जिसका उद्देश्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग से संबद्ध संस्थानों और केंद्रों में संचालित अनुसंधान एवं विकास कार्यों को एक साझा मंच पर लाना है, ताकि भारत की वैज्ञानिक क्षमता को सुदृढ़ करते हुए आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया जा सके।

इस संगोष्ठी के माध्यम से अनुसंधान, विकास एवं प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित चुनौतियों, समस्याओं और संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा। साथ ही यह संगोष्ठी वैज्ञानिक प्रयासों की सामाजिक प्रासंगिकता को जन-जन तक पहुँचाने तथा विज्ञान के प्रसार में *राजभाषा हिंदी* के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए भी समर्पित है।

संगोष्ठी आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक/ Chief Patron :	प्रो आशीष कुमार मुखर्जी, निदेशक, आईएएसएसटी
मुख्य समन्वयक/ Chief Co-ordinator	प्रो. देवाशीष चौधरी, प्रमुख पीएसडी
उप समन्वयक/ Deputy Co-ordinator	प्रो. मुनिमा बी. सहरिया, प्रमुख, एसएआईसी
वित्त प्रबंधन/ Financial Management :	श्री प्रद्युत बरकटकी
पत्राचार विवरणिका ईमेल/ Correspondence Brochure Email:	डॉ. आशीष बाला श्री सचिन नरवड़िया डॉ. सौरव दास
तकनिकी समिति)आलेख आमंत्रण एवं सममारिका प्रकाशन आदि)/ Technical Committee (Article Invitations and Souvenir Publications, etc.) : (आलेख संस्थान के हिंदी प्रकोष्ठ के ई-मेल पर आमंत्रित किए जाएंगे)	प्रो देवाशीष चौधरी डॉ आशीष बाला डॉ विजय कुमार सिंह डॉ शिव शंकर पाण्डेय
हाल सजावट समिति/ Hall Decoration Committee :	डॉ रागिणी बोदड़े , श्री मोहम्मद श्रीमती सरला डेका
पंजीकरण व उपहार प्रबंधन समिति/ Registration and Gift Management Committee:	डॉ दिगंत गोस्वामी , श्रीमती शर्मिना देवी सुश्री पोम्पी कलिता , सुश्री रिंकी सुश्री मुनमी डेका
भोजन प्रबंधन समिति/ Food Management Committee :	निरंजन भगबती , द्विजेन्द्र देका डॉ शिव शंकर पाण्डेय , उदिप्ता डेका
सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति/ Cultural Program Committee:	डॉ. विश्वजीत चौधरी , श्री राजलोचन बरुआ श्रीमती पिंकी ताये , श्रीमती निर्माली देवी
परिवहन व्यवस्था व आवास समिति/ Transport and Accommodation Committee :	प्रो अरूप आर पाल , डॉ विजय कुमार सिंह श्री रबिन कलिता , डॉ. संतू दास
मीडिया, प्रकाशन एवं फोटोग्राफी/ Media, Publication & Photography:	डॉ. तारिणी देब गोस्वामी श्री सचिन नरवडिया

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उच्च अध्ययन संस्थान (आईएएसएसटी)

देश में अनुसंधान के प्रमुख केंद्रों में से एक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उच्च अध्ययन संस्थान (आईएएसएसटी), गुवाहाटी जिसका उद्घाटन वर्ष 1979 में नोबल लॉराइट एवं एक ब्रिटिश जैविक रसायनज्ञ, मैडम डोरोथी हॉजकिंस द्वारा किया गया था। इसे वर्ष 2009 में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा अपने एक स्वशासी संस्थान में अधिग्रहित किया गया। आईएएसएसटी एक बहुविषयक - अनुसंधान एवं विकास संस्थान है जिसका अनुसंधान जैव विविधता, जैव प्रौद्योगिकी, उन्नत पदार्थ विज्ञान और प्लाज्मा भौतिकी पर केंद्रित है। वर्तमान में संस्थान में 23 वैज्ञानिक और 105 शोधकर्ता कार्यरत हैं, जो इसे पूर्वोत्तर भारत का एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान बनाने और देश में इसकी दृश्यता बढ़ाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। साथ ही संस्थान में परिष्कृत विश्लेषणात्मक उपकरण केंद्र, गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला, बायोनेस्ट- इन्क्यूबेशन सेंटर और पशु गृह सुविधा भी उपलब्ध है।